महाभारत के सशक्त पात्र भीषम पितामह एक विश्लेषण

शोधार्थी :- सुरेश कुमार

सत्यनिष्ठा, वीर, धैर्यवीर, दृढ़-प्रतिज्ञा, नीतिज्ञ, आत्मत्यागी, देवव्रत-हस्तिनापुर के महाराजा शान्तनु तथा देवी गंगा के आठवीं संतान थे | माता गंगा द्वारा उन्हें पिता को सौंप कर चले जाने के पश्चात उन्होंने भगवन परशुराम के आश्रम में रहकर शिक्षा-दीक्षा अर्जित की | पिता की इच्छा पूर्ती हेतु उनकी राज्य त्याग की प्रतिज्ञा तथा आजीवन ब्रह्मचारी रहने के प्रण के कारण उन्हें 'भीषम' नाम दिया गया | उनकी इस भीष्म प्रतिज्ञा के फलस्वरूप पिता ने उन्हें इच्छा मुक्ति का वरदान दिया था |

महान योद्धा भीष्म के चरित्र से सब शिक्षाएँ एक साथ मिल जाती हैं | पिता के प्रति पुत्र की कैसी भक्ति होनी चाहिए, माता और विमाता के प्रति उसके क्या कर्तव्य हैं, गुरु के प्रति शिष्य की श्रद्धा कैसी होनी चाहिए मानवता क्या है, शास्त्र अध्ययन, ब्रह्मचर्य और सरल जीवन के निर्वाह का फल क्या है, इन सब बातों का सरल सा उतर हमें भीष्म के जीवन से मिल जाता है |

अपनी प्रतिज्ञा के बंधन में बंधे गंगापुत्र देवव्रत अर्थात् भीष्म जीवन भर अपने दिए वचन पर अचल रहे | जबकि उनके पिता अंत में उन्हें प्रतिज्ञा तोड़ने और राज्य हस्तगत कर लेने को कहते हैं तो भीष्म उतर देते हैं "प्रतिज्ञा तोड़ी तो न केवल भीष्म टूटेगा वरन भरत वंश का कीर्ति-कलश भी टूटकर गिर जाएगा ...आप मुझे इस लिए बाध्य न करें" 1 |

पिता की मृत्यु के पश्चात उन्होंने न केवल राज्य तथा राजकुमारों का दायित्व संभाला अपितु अपने जीवन की अंतिम घडी तक कुरुवंश की कई पीढ़ियों का दायित्व संभालते रहे | माता सत्यवती के पुत्र

विचित्रवीर्य, जो कि विलासी प्रवृति का था, के लिए वह काशीराज की कन्याओं अंबा, अंबिका और अम्बालिका का उनके ही स्वयंवर से अपहरण कर लाते हैं |

अम्बा का शाल्वराज के प्रति अनुराग देख वह उसे उनके पास भेज देते हैं और अंबिका तथा अंबालिका का विवाह अपने भाई विचित्रवीर्य से करवाते हैं | किन्तु अंबा को राजा शाल्व अस्वीकार कर देता है और वह हस्तिनापुर वापिस आ कर भीष्म से विवाह करना चाहती है | भीष्म के गुरु परशुराम भी उसे अंबा को ग्रहण करने का आदेश देते है किन्तु भीष्म अपनी आजीवन विवाह न करने की प्रतिज्ञा के कारण उनकी आज्ञा अस्वीकार कर देते हैं, जिसके कारण भीष्म और परशुराम के बीच युद्ध छिड जाता है किन्तु गंगा आकर इस युद्ध को रुकवा देती है, किन्तु परशुराम भीष्म को श्राप देते हैं कि यही अम्बा तेरी मृत्यु का कारण बनेगी | विचित्रवीर्य की मृत्यु पश्चात माता सत्यवती के अनुरोध पर भी भीष्म नियोग द्वारा वंश बुद्धि के प्रस्ताव से इनकार करते हुए अपने आजीवन ब्रह्मचार्य रहने की प्रतिज्ञा पर अटल रहते हैं और कहते हैं- "माता यह तो हरगिस न होगा | मैं जिस के लिए प्रतिज्ञा कर चूका हूँ, उस कार्य को कदापित न कर सकूंगा | आज मैं आप के समक्ष एक और प्रतिज्ञा करता हूँ, सुनिए, मैं तीनों लोकों की प्राप्ति छोड़ सकता हूँ, स्वर्ग-भोग छोड़ सकता हूँ, इन्द्रदेव का त्याग कर सकता हूँ, इससे भी बड़ी अगर कोई पद्दति हो तो मैं उसे भी छोड़ सकता हूँ, परन्तु सत्य का त्याग कभी न कर सकूँगा" 2 |

तत्पश्चात नियोग की परम्परा द्वारा व्यास के माध्यम से हस्तिनापुर राज्य को धृतराष्ट्र और पांडु नामक राजकुमार प्राप्त हुए | राज्य के भावी महाराज अर्थात् धृतराष्ट्र का जन्मांध होने के कारण भीष्म की चिंता ओर बड जाती है | भविष्य में वह अपनी सैन्य शक्ति

के बल पर धृतराष्ट्र का विवाह गांधार राज्य की राजकुमारी गांधारी से तथा रोगी पांडू का विवाह कुन्ती तथा बाद में माद्री से करवाते हैं |

परिवार क्र प्रति उनका दायित्व तथा कर्तव्य यहाँ खत्म नहीं होता बल्कि अंधे धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों की ज़िम्मेदारी के साथ-साथ पाण्डू की मृत्यु पश्चात कुंती तथा उनके पांच पुत्रों के पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी भी उन्हीं के कन्धों पर आती है |पांच पाण्डव पुत्रों तथा सौ कौरव पुत्रों की शिक्षा-दीक्षा हेतु वे पहले कृपाचार्य तत्पश्चात द्रोणाचार्य को नियुक्त कर राजकुमारों को अस्त्र-शस्त्र की विद्या दिलवा कुशल योद्धा बनाने में सफल होते हैं |अत: यह कहा जा सकता है कि पितामह पुत्रों-प्रपोत्रों के लालन-पालन तथा उनके संरक्षण की ज़िम्मेदारी जीवन की अंतिम साँस तक कुशलता पूर्वक निभाते रहें |

सत्य, न्याय, धर्म की कसौटी पर सदा परखे जाने वाले भीष्म पितामह धृतराष्ट्र के न चाहते हुए भी युधिष्ठर को युवराज घोषित कर उसका राज्याभिषेक करवाते हैं तथा उन्हें सदा प्रजा की रक्षा करने, न्याय-संगत रहने, उनका सहयोग तथा सुख-दुःख में साथ देने का ज्ञान देते हुए, राजा का कर्तव्य व परमधर्म समझाते हैं |किन्तु पुत्र मोहोध तथा राज-सता के लालची धृतराष्ट्र हठी दुर्योधन व षड्यात्कारी शकुनी के आगे भीष्म पितामह भी लाचार व बेबस हो जाते हैं |कई बार पांडवों के प्रति हुए अन्याय व षड्यंत्र को वह भांप नहीं पाते या देखकर अनदेखा कर लेने में विवश हो जाते हैं |यह भीष्म पितामह की राज्य तथा महाराज के प्रति वचनबद्धता थी कि वह चाहकर भी पांडवों को राज्य विभाजन पश्चात मिले खंडर वानप्रस्थ का विरोध कर पाने में असफल रहते है |पितामह की कसौटी एक बार फिर तब परखी जाती है, जब द्रौपदी को दांव पर लगाया जाता है तथा भरी सभा में उसका चीरहरण कर उसे अपमानित किया जाता है |इस गंभीर तथा नापुक

अवसर पर भी वह चुप रहते हैं और द्रौपदी के प्रश्न पूछने पर उसे गलत न मानते हुए धर्म शास्त्र अनुसार स्त्री को प्रत्येक अवस्था में पति के अधीन बनाकर उसे दांव पर भी लगाने का पक्ष लेते हैं |

भीष्म जीवन पर धर्म का पालन बड़ी निष्ठा से करते हैं और दुर्योधन की भी धर्म के मार्ग पर चलने को कहते है किन्तु दुर्योधन उनकी एक नहीं मानता है | दुर्योधन का अनीतिपूर्ण तथा अधर्म के मार्ग पर चलते हुए पांडवों का सब कुछ छ्न-लेने तथा उनके वनवास से वापस आने पर आधा राज्य न लौटाने का हठ महाभारत युद्ध का कारण बनता है |

भीष्म धर्म में इतनी आस्था रखते हैं कि वे श्री कृष्ण को अवतारवादी पुरुष मानते हैं | श्री कृष्ण जब पांडवों का संधि प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर आते हैं तो दुर्योधन उन्हें बंदी बनाने की योजना बनाते हैं जिससे क्रोधित होकर श्री कृष्ण कुरु सभा में अपना विराट रूप धारण कर लेते हैं | उनके विराट रूप के दर्शन केवल भीष्म, धृतराष्ट्र और संजय को होते हैं, बाकी सारी सभा मुर्चित हो जाती है |

भीष्म पितामह के बार-बार समझाने पर भी दुर्योधन नहीं मानता और अंतत: महाहारत के युद्ध में भीष्म पितामह को बतौर से नापती कौरव सेना का नेत्रित्व कर अपने क्षत्रिप धर्म का पालन करते हैं | वीर योद्धा, पराक्रमी भीष्म पितामा के समक्ष पांडव सेना टिक नहीं पाती और जिसे देख कर कृष्ण क्रोधित होकर स्वयं रथ का पहिया उठाकर भीष्म को मारने के लिए आगे बढ़ते हैं, जिसे देख कर भीष्म कहते हैं- "आओ प्रभु मेरा संहार करो | मुझे आज तुमने प्रभूत सम्मान का अधिकारी कर दिया है | मुझ पर प्रहार करो | मैं तुम्हारा दास प्रस्तुत हूँ"3 |

कृष्ण के कहने पर पांडव भीष्म से उनकी मृत्यु का माध्यम पूछते हैं तो भीष्म पिताम कहते हैं कि उन्होंने युद्ध से पहले प्रतिज्ञा की थी कि वह युद्ध भूमि में बच्चों, बूढ़ों, स्त्री, हिजड़ों, अपाहिजों, असहाय और जो पूर्व जन्म में स्त्री है उसपर वार नहीं करेगा |इसलिए अर्जुन शिखंडी अम्बा का ही रूप है, तुम शिखंडी को सामने रखकर मेरा वध कर सकते हो |अर्जुन वैसा ही कर युद्धभूमि में उनपर बाणों से वार कर उन्हें शरशैया पर लिटा देते हैं |युद्ध के अंतिम दिन अर्थात् अठारहवें दिन बाद युधिष्ठर भाइयों समेत श्री कृष्ण के साथ उनसे आशीर्वाद लेने जाते हैं तो वह युधिष्ठर से कहते हैं कि आखिर यह विजय का मुकुट तुम्हे मिल ही गया जिसके तुम अधिकारी थे |परन्तु युधिष्ठर राज्य त्यागने की बात करता है और हाथ जोडकर भीष्म को प्रणाम करते हुए कहते है कि पितामह आप मेरा मार्ग दर्शन करे |तब भीष्म श्री कृष्ण को नमस्कार करते हुए चारों वर्णों के साथ चारों आश्रमों के धर्म तथा राजा के द्वारा कौन-कौन से धर्म माने गये हैं |वह युधिष्ठर को बताते है और अंत: में भीष्म युद्ध के अट्ठावन दिन के बाद कहते है "सौभाग्य की बात है कि इस समय भगवान सूर्य दक्षिण से उतरायण की ओर लौट चुके हैं, इन बाणों की शैया पर मुझे अट्ठावन दिन बीत गये है लेकिन यह अट्ठावन दिन सौ वर्षों के समान प्रतीत होते है" 4| अंत: में भीष्म श्री कृष्ण को नमस्कार कर उनके प्राण मस्तिष्क के रास्ते उनका शरीर छोड़ जाते है |

भीष्म पितामह धर्म के स्तम्भ, न्याय पालक, इतने शक्तिशाली थे कि उनका सामना करने का सामर्थ्य किसी में भी नहीं था किन्तु उन्होंने इसका अनुयित लाभ न उठाते हुए; सदा अपनी प्रतिज्ञा का पालन दृढ़ता पूर्वक किया, जिसके कारण वह आज भी एक उदाहरण बन हमारे समक्ष प्रस्तुत होते हैं |

संदर्भ :-

1. कोहली, नरेंद्र, बंधन, पृ.106 |
2. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भीषम पितामह, पृ.36 |
3. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, भीषम पितामह, पृ.71 |
4. सविता चड्ढा, अट्ठारह दिन बाद, पृ.111 |